नौनिहाल सेनानी

गरिमा ;समस्तीपुरद्ध बिहार

नौनिहाल हमारे
कोमल पलकों पर
अपने बिखेरे हुये हैं
सपनों के
रंग–बिरंगे मोती,
अभी निकलें हैं
चमकते जो बंद सीपों से,
इनमें ही है
इस जहां की तस्वीर छुपी,
माटी की सुगंध
इनमें है बसी
नौनिहाल हमारे
शोर में जी रहे
जीत की होड़ में जी रहे,
तरक्की का स्वाद लेने
निकल चले,
परों के मजबूत
होने से पहले
हवाओं से भिड़ने उड़ चले,
इनके लिये आसमां सिमटा
बादलों को चीड़कर
सूरज है निकला
तमस् से जंग में
सजाकर कंधें पर तरकश
ये जो निकल पड़े,
इन सेनानियों के आगाज
ने नतमस्तक दुनिया को
है किया।